# उपसंहार

# उपसंहार

यथार्थवादी उपन्यासकार सर्वेश्वरदयाल सक्सेना हिंदी के प्रमुख साहित्यकारों में से एक हैं। उनका हिंदी साहित्य में महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। वे बचपन से ही कविता और कहानियों के प्रति रुचि रखते थे। परिवार में माता-पिता की साहित्य के प्रति विशेष रुचि होने के कारण सर्वेश्वर जी को उनसे साहित्य सृजन की प्रेरणा प्राप्त हुई। उन्होंने युवावस्था में कहानियाँ लिखना आरंभ किया था। पिताजी के विरोध के बावजूद भी उन्होंने जीवन में साहित्य की सेवा करने के मार्ग को अपनाया। उन्होंने अपनी प्रतिभाशक्ति के बल पर बहुमुखी साहित्य का निर्माण किया। जिससे उनकी प्रतिभा का परिचय मिले बीना नहीं रहता।

इस लघु शोध-प्रबंध में मुख्य रूप से समाज के बाहरी रूप की जगह उसके भीतरी या मनोवैज्ञानिक रूप को लक्ष्य बनाया है। अध्ययन की सुविधा के अनुसार प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध को पाँच अध्यायों में विभाजित किया है।

प्रारंभ में सर्वेश्वरदयाल सक्सेना का जीवनवृत्त तथा व्यक्तित्व एवं कृतित्व की झाँकी मिलेगी। सक्सेना जी का बचपन बस्ती जिले के पिकौरा नामक गाँव में बीता। उनकी पारिवारिक स्थिति शोचनीय थी। माता-पिता के आकस्मीक मृत्यु ने उनके जीवन पर बहुत बड़ा आघात किया। वे परिश्रमी व्यक्ति थे। उन्होंने अपने बलबुते पर एम्. ए. तक की शिक्षा पूरी की। उसके पश्चात् अनेक जगह पर नौकरियाँ भी की परंतु उन्हें सभी जगह अस्थायी रूप ही महसूस हुआ। इस कारण उन्होंने अंत में संपादन कार्य से अपना नाता जोड़ दिया। उनका विवाह श्री. सच्चीदानंद वर्मा की पुत्री आनंदीदेवी के साथ हुआ। वे पत्नी आनंदीदेवी से बहुत प्यार करते थे, परंतु पत्नी आनंदीदेवी की असमय मृत्यु हो जाने से वे बहुत निराश हुए। पुत्र 'अभिजीत' की तीन साल की आयु में मृत्यु हो गई। इसके बाद इन्होंने छोटी-छोटी दोनों बेटियाँ विभा और शुभा के साथ स्वयं का दुःख, दर्द, समाज का दुःख-दर्द तथा गरीबों का दुःख-दर्द को बाँटने में ही अपना

जीवन बिताया। अतः ऐसे प्रतिभाशाली तथा गुणसंपन्न उपन्यासकार की मृत्यु 23 सितंबर, 1983 ई. में दिल का दौरा पड़ने से हो गई। उस समय से हिंदी साहित्य में उनकी क्षति हमेशा महसूस होती रही है।

सर्वेश्वर जी का व्यक्तित्व तेजस्वी था। उनके सावले चेहरे पर हमेशा हँसी की झलक रहती थी। बचपन ग्रामीण परिवेश में बीतने के कारण उनका रहन-सहन अत्यंत सीधा-सादा था। प्रतिभाशाली, परिश्रमी, कलाप्रेमी, स्पष्टवादी, भावुक, विद्रोही, अलिप्ततावादी तथा गरीबों के प्रति आस्था आदि विशेषताओं से उनका व्यक्तित्व भरापूरा था। उनकी ख्याति एक कवि के रूप में है। उसके साथ-साथ वे एक सफल उपन्यासकार भी रहे हैं। समाज व्यवस्था के प्रति आवाज उठानेवाले 'सूने चौखटे' तथा 'सोया हुआ जल' जैसी उनकी बहुमुल्य उपन्यास कृतियों से हिंदी साहित्य समृद्ध हुआ है।

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना ने मध्यवर्गीय जीवन को केंद्र में रखकर अपना साहित्य सृजन किया। नेताजी सुभाषचंद्र बोस, राम मोहन लोहिया और मुक्तिबोध का प्रभाव उनके व्यक्तित्व पर दिखाई देता है। उन्होने कविता, कहानी, नाटक, उपन्यास, एकांकी तथा बाल-साहित्य भी लिखा है। उसके द्वारा उन्होने सत्य और यथार्थ को समाज के सम्मुख लाने का सफल प्रयास किया है। कविताओं में जीवन संघर्ष की सच्ची अभिव्यक्ति हुई है, तो उनके कहानियों में जीवन की विसंगतियाँ, समाज में फैला भ्रष्टाचार तथा वर्ग संघर्ष के समूल विनाश का दर्शन होता है। वे नाटक द्वारा लोकधर्मी यथार्थता का चित्रण करते हैं। उनके उपन्यास साहित्य के द्वारा समाज की व्यवस्था पर व्यंग्य का दर्शन होता है। वे समाज को बाहर से नहीं तो भीतर से सुधारना चाहते हैं। इसी कारण हिंदी साहित्य में सर्वेश्वर जी की अलग पहचान बनी हुई है।

निष्कर्षतः कहना गलत नहीं होगा कि सर्वेश्वर जी का जीवन वृत्त तथा व्यक्तित्व से उनके साहित्य को समझने में देर नहीं लगती। अतः कहा जा सकता है कि सर्वेश्वर जी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व बहुआयामी है। साथ ही समाज के लिए प्रेरणादायी है।

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना के उपन्यासों की विषयवस्तु का मूल्यांकन करने के उपरांत कहा जा सकता है कि 'सूने चौखटे' उपन्यास का प्रारंभ वर्णनात्मक, रोचक तथा जिज्ञासा उत्पन्न कर जर्जर पृष्ठभूमि का भी जिक्र करता है। विवेच्य उपन्यासों में मध्यवर्गीय परिवार में घटित असफल प्रेम-कथा का चित्रण किया है। इसमें नायिका कमला की मानसिक स्थिति को मार्मिक रूपों में प्रस्तुत किया है। वह प्रेमी रामू से बहुत प्यार करती है। अपने प्रेमी रामू की तस्वीर मन के दिवारों में बांधे रखती है और उस तस्वीर को प्यार के विविध रंगों से सजाती है। उसे परंपराओं तथा पारिवारिक मर्यादाओं के कारण प्रेमी रामू का त्याग करना पड़ता है। वह परिवार की मर्जी से धनी व्यापारी के बेटे से शादी करती है। विवाह के बाद परिवारवालों से तथा प्रेमी रामू से विदा लेती है। उस समय उसके मन में चित्रित प्यार की तस्वीर टूट जाती है। उसे सचमुच ही मन की जड़ता में 'सूने चौखटे' का आभास बार-बार होता रहता है। विवेच्य उपन्यास का अंत गहरी करुणा के साथ होता है। जिसमें सूना चौखटा अंत में सूना ही रह जाता है। विवेच्य उपन्यास की नायिका कमला में भारतीय नारी के परंपरागत उदात्त त्यागमय और मर्यादावादी आदि गुण दिखाई देते हैं। उसके साथ-ही-साथ सर्वेश्वर जी ने निम्नवर्गीय समाज की जड़ता तथा पीड़ादायी जीवन का मार्मिकता से चित्रण किया है। इसमें समाज की परंपरा, मूल्य व्यवस्था आदि पर व्यंग्यात्मक रूपों में प्रकाश डालकर उसमें बदलाव लाने का प्रयास सर्वेश्वर जी ने किया है।

'सोया हुआ जल' सर्वेश्वर जी का मौलिक लघु-उपन्यास है। इसका शीर्षक प्रतीकात्मक है। विवेच्य उपन्यास में बीमार बूढ़ा पहरेदार यात्रीशाला को पहारा देता है। उस समय वह यात्रीशाला के कमरों से भिन्न-भिन्न अवाजें सुनता है। सभी पात्र विभा, राजेश, किशोर, रतना प्रकाश तथा दिनेश स्वप्न में विचरण करके अपनी इच्छापूर्ती अचेतन मन के द्वारा करते हैं। उसी वजह से सभी पात्रों का जीवन अशांत है - जिसमें कोई नौकरी के नियुक्ति पत्र की प्रतीक्षा में, तो कोई रायल का नाम लेकर भूखे सोते हैं, कुछ इंद्रीय सुख की भूख में व्याकुल हैं, कुछ प्रसन्नता की खोज में जीवन को व्यर्थ करते हैं। 'सोया हुआ जल' अंतश्चेतना में सोई हुई आंतरिक प्यास है, जो समाज में आज भी मनुष्य की भीतरी प्रवृत्तियों को उजागर करती है।

संक्षेप में कहना होगा कि विवेच्य उपन्यासों में समाज की भीतरी पीड़ा को उजागर किया है। जिससे समाज सुधारने का संदेश मिलता है। विषय वस्तु की दृष्टि से विवेच्य उपन्यास सफल रहे हैं।

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना के उपन्यासों में चित्रित सामाजिक यथार्थ का विवेचन-विश्लेषण करने के पश्चात् जो तथ्य सामने आए हैं वे इस प्रकार से - सर्वेश्वरदयाल सक्सेना के 'सूने चौखटे' तथा 'सोया हुआ जल' उपन्यासों में उच्च वर्ग, मध्य वर्ग, निम्न वर्ग, अनिष्ठ प्रथा, रीति-रिवाज, समाज व्यवस्था, भेदभाव, दमित-वासना तथा नये-पुराणे विचार आदि का यथार्थ रूपों में चित्रण दृष्टिगोचर होता है। वे समाज में जनक्रांति की दुहाई देनेवाले नेता की भीतरी स्वार्थी वृत्ति का प्रकाश के माध्यम से यथार्थ चित्रण करते हैं। समाज के निम्न वर्ग में प्रचलित रीति-रिवाज, अनिष्ठ प्रथा, अचार-विचार, नैतिक धारणा आदि का सर्वेश्वर जी ने विवेच्य उपन्यासों में यथार्थ चित्रण किया है। इसके साथ-साथ मध्य वर्ग की दमित वासनाओं को भी यथार्थ रूप में स्पष्ट किया है। जिसमें मध्यवर्गीय पात्रों की मानसिक कुंठा, घृणा तथा तृष्णा आदि का पर्दाफाश किया है। उन्होंने विवेच्य उपन्यासों में मजदूर वर्ग की पीड़ादायी जिंदगी का यथार्थ चित्रण किया है। सर्वेश्वर जी ने गाँव की भीतरी पीड़ा को जिया और भोगा ही नहीं तो उसे साहित्य के द्वारा समाज के सामने लाने का प्रयास किया है। वे समाज के बाहरी रूप को नहीं बल्कि उसके भीतर छिपी गंदगी का नाश करके समाज सुधारने का प्रयास करते हैं।

अंत में कहना सही होगा कि सर्वेश्वरदयाल सक्सेना के विवेच्य उपन्यास सामाजिक यथार्थ को चित्रित करने में सक्षम हैं।

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना के उपन्यासों में चरित्र-सृष्टि के उपरांत जो तथ्य सामने आए हैं वे इस प्रकार हैं- सर्वेश्वरदयाल सक्सेना के 'सूने चौखटे' उपन्यास की कमला नायिका है जो प्रतिभाशाली, महत्त्वाकांक्षी, स्पष्टवादी, जिज्ञासू, मर्यादावादी, संस्कारशील तथा भावूक आदि गुणों से युक्त नजर आती है। उपन्यास का नायक के रूप में रामू है जो महत्त्वकांक्षी, खेलकूद के प्रति लगन रखनेवाला, जिज्ञासू, समाज सेवी, अत्याचार का विरोधी, सुधारवादी, दूसरों के प्रति

चिंतित, परिश्रमी तथा असफल प्रेमी आदि गुणों से युक्त दिखाई देता है। गौण पात्र के रूप में हेम दीदी तथा खुन्नू हैं। हेम दीदी स्वाभीमानी, संघर्षशील, बुद्धिमानी तथा आधुनिक विचारों की समर्थक आदि विविध रूपों में दिखाई देती है। खुन्नू में परिश्रमी, आदर्श प्रेमी तथा समाज सेवी आदि विशेषताएँ परिलक्षित होती हैं। अन्य पात्र अपनी-अपनी विचार धाराएँ लेकर सामने आते हैं। विवेच्य उपन्यास में विभिन्न वर्ग के पात्रों का वर्णन सर्वेश्वर जी ने मार्मिकता से किया है। उपन्यास में सर्वेश्वर जी ने मध्यवर्गीय परिवार में घटित असफल प्रेम कथा को स्पष्ट किया है। इसमें कमला की मानसिक दशा का चित्रण मिलता है . जिसमें कुंठा, घृणा तथा तृष्णा आदि रूप परिलक्षित होते हैं। अतः 'सूने चौखटे' उपन्यास चरित्र-चित्रण की दृष्टि से सफल उपन्यास है।

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना के 'सोया हुआ जल' उपन्यास में चरित्र-चित्रण का उचित निर्वाह हुआ है। विवेच्य उपन्यास का नायक राजेश के व्यक्तित्व में आदर्श पति, सौंदर्य का पुजारी, कर्म के प्रति निष्ठावान, विभा को सहारा देनेवाला, सपनों की दुनियाँ में जिनेवाला तथा डरपोक आदि विशषेताएँ उनके व्यक्तित्व में इंगित होते हैं। विभा प्रस्तुत उपन्यास की नायिका है। उसके व्यक्तित्व में आदर्श पत्नी, दृढ़ निश्चयी, मर्यादावादी प्रेमिका, डरपोक, स्पष्टवादी, क्रोधि तथा सपनों की दुनिया में जीनेवाली आदि गुण दृष्टिगोचर होते हैं। गौण पात्रों के रूप में किशोर, रतना, दिनेश तथा प्रकाश हैं। किशोर उपन्यास का नायक राजेश का भाई है। किशोर पलायनवादी, स्वार्थी, कायर, लाचार, बेकार तथा कामुक युवा पात्र है। रतना के व्यक्तित्व में स्पष्टवादी, आदर्श प्रेमिका तथा अहंकारी आदि गुण दृष्टिगोचर होते हैं, तो दिनेश उपन्यास में असाधारण पात्र के रूप में दिखाई देता है। इनमें उपदेशक, सहानुभूतिशील, सच्चा मित्र, नये विचारों का प्रवर्तक, समाज की भ्रष्ट वृत्ति का विरोधी तथा प्रकाश का पथ निर्देशक आदि विशेषताओं से उनका व्यक्तित्व तेजस्वी बना है। प्रकाश के व्यक्तित्व पर लेनिन का प्रभाव दिखाई देता है। वह पार्टी आफिस में आग लगने पर हिम्मत न हारने का लोगों को संदेश देता है। वह जनक्रांति नेता है। अन्य पात्रों का जिक्र प्रसंगवश और यथायोग्य मिलता है। पात्र संख्या, पात्र चयन तथा चरित्र-चित्रण की दृष्टि से प्रस्तुत उपन्यास सफल रहा है। सर्वेश्वर जी ने विवेच्य

उपन्यास में राजेश, विभा, किशोर, रतना आदि पात्रों की मानसिकता का चित्रण किया है। जिसमें कुंठा, तृष्णा तथा घुटन आदि का प्रयोग मिलता है। अतः कहा जा सकता है कि 'सोया हुआ जल' उपन्यास चरित्र-चित्रण की दृष्टि से सफल उपन्यास है।

अंततः कहना सही होगा कि सर्वेश्वरदयाल सक्सेना के उपन्यासों में चित्रित पात्र समाज में सुधार लाने का प्रयास करते हैं।

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना के उपन्यासों का भाषा-शैली की दृष्टि से विवेचन-विश्लेषण करने के उपरांत जो तथ्य सामने आए हैं, वे इस प्रकार हैं- भाषा शैली की दृष्टि से सर्वेश्वर जी रोचक, प्रभावपूर्ण एवं पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग किया है। अपनी भाषा को जीवंत बनाने के लिए सर्वेश्वर जी ने विभिन्न भाषाओं से शब्द ग्रहण किए हैं। जिसमें अरबी, फारसी, अंग्रेजी तथा संस्कृत शब्दों का प्रयोग मिलता है। इसके साथ-साथ ध्वन्यार्थक, निरर्थक, द्विरूक्त तथा संयुक्त आदि अन्य शब्दों का प्रयोग कम-अधिक मात्रा में प्रसंगानुकूल परिलक्षित होता है। सर्वेश्वर जी ने विवेच्य उपन्यासों में जनसाधारण की बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया है। उन्होंने भाषा को सौंदर्य प्रदान करने के लिए उनके विविध उपकरणों का चित्रण किया है। जिसमें- आवेशात्मक, उपदेशात्मक, पात्रानुकूल, गालियों से युक्त शब्द, मुहावरे, लोकोक्तियाँ तथा व्यंग्यात्मक आदि का यथार्थ संगत प्रयोग मिलता है। जिसके कारण सर्वेश्वर जी के उपन्यासों में प्रभावात्मकता दृष्टिगोचर होती है। सर्वेश्वर जी ने प्रतीकात्मक, वर्णनात्मक, प्रश्नोत्तर, गीतात्मक, सांकेतिक, मनोवैज्ञानिक, संवाद और पूर्व दीप्ति आदि विभिन्न प्रकार की शैलियों का प्रयोग किया है। सर्वेश्वर जी का 'सूने चौखटे' उपन्यास सोद्देश्य पूर्ण है। इनमें नारी के परंपरागत उदात्त और त्यागमय रूप के साथ-साथ आधुनिक नारी का चित्र भी स्पष्ट किया है। 'सोया हुआ जल' उपन्यास में सर्वेश्वर जी ने मध्यवर्गीय कुंठा, तृष्णा तथा घुटन का चित्रण करके दुनिया को बाहर से नहीं बल्कि भीतर से जगाने का प्रयास किया है।

निष्कर्षतः कहना आवश्यक होगा कि भाषा शैली की दृष्टि से सर्वेश्वर जी के 'सूने चौखटे' तथा 'सोया हुआ जल' उपन्यास सफल रहे हैं।

**उपलब्धियाँ -**

'सर्वेश्वरदयाल सक्सेना के उपन्यासों का अनुशीलन' करने के पश्चात् जो उपलब्धियाँ प्राप्त हुई हैं वे सार रूप में इस प्रकार हैं -

1. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना के 'सूने चौखटे' तथा 'सोया हुआ जल' उपन्यासों की हिंदी साहित्य में यथार्थ की दृष्टि से अपनी एक अलग पहचान है।
2. विवेच्य उपन्यासों में कथ्य के गठन और चरित्र चित्रण के भीतर आदर्शवादिता तथा सुधारवादी मनोवृत्ति का प्रसार रहा है।
3. विवेच्य उपन्यासों में पीछड़ी जाति की जीवन पद्धति का रूप मिलता है। सर्वेश्वर जी ने पीछड़ी जाति के लोगों के परिवेश में रहन-सहन, आचार-विचार आदि में बदलाव लाने का प्रयास किया है।
4. विवेच्य उपन्यासों में समाज में व्याप्त वर्गव्यवस्था, अनिष्ठ प्रथा, रीति-रिवाज तथा समाज व्यवस्था आदि का पर्दाफाश करके समाज परिवर्तन का दृढ़तापूर्वक समर्थन किया है।
5. विवेच्य उपन्यासों द्वारा सर्वेश्वर जी ने मध्य वर्ग की तृष्णा, कुंठा और घुटन का चित्रण करके दुनिया को बाहरी रूपों से नहीं बल्कि भीतरी रूपों से सुधारने का महत् प्रयास किया है।
6. विवेच्य उपन्यासों में नारी के परंपरागत, उदात्त, त्यागमय आदि रूपों के साथ-ही-साथ सर्वेश्वर जी ने आधुनिक नारी का चित्रण प्रस्तुत किया है।

**अध्ययन की नई दिशाएँ -**

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना के 'सूने चौखटे' तथा 'सोया हुआ जल' उपन्यासों पर निम्नांकित विषयों को लेकर स्वतंत्र रूप से अनुसंधान किया जा सकता है -

1. ''सर्वेश्वरदयाल सक्सेना के उपन्यासों में चित्रित मनोविज्ञान''
2. ''सर्वेश्वरदयाल सक्सेना के उपन्यासों में चित्रित व्यंग्य''

3. ''सर्वेश्वरदयाल सक्सेना के उपन्यासों में चित्रित नारी-विमर्श''

अतः प्रत्येक शोध-विषय की स्वतंत्र सीमा होती है। मेरा अनुसंधान का कार्य भी अपनी सीमा में ही रहकर संपन्न हुआ है। भविष्य में उपर्युक्त विषयों पर स्वतंत्र रूप से अनुसंधान हो सकता है।

# संदर्भ ग्रंथ-सूची

# संदर्भ ग्रंथ सूची

## अ) आधार ग्रंथ (हिंदी) -


| *क्र.* | *लेखक का नाम* | *ग्रंथ का नाम* | *प्रकाशन और प्रयुक्त संस्करण* |
|---|---|---|---|
| 1. | सर्वेश्वरदयाल सक्सेना | सूने चौखटे | वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली - 110002 पेपर बैक संस्करण - 2006 |
| 2. | सर्वेश्वरदयाल सक्सेना | सोया हुआ जल और पागल कुत्तों का मसीहा | वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली - 110002 प्रथम संस्करण - 1997 |


## ब) संदर्भ ग्रंथ (हिंदी) -


| | | | |
|---|---|---|---|
| 1. | अमी आधार 'निडर' | समाचार संकल्पना एवं अनुवाद | जवाहर पुस्तकालय, मथुरा उत्तरप्रदेश - 281001 संस्करण - 2004 |
| 2. | ओमप्रकाश शर्मा 'प्रकाश' | पच्ची उपन्यास : नाटकीयता के निकष पर | पांडुलिपि प्रकाशन, कृष्णनगर, दिल्ली - 110051 प्रथम संस्करण - 1987 |
| 3. | डॉ. कल्पना अग्रवाल | सर्वेश्वरदयाल सक्सेना : व्यक्ति और साहित्य | चंद्रलोक प्रकाशन, किदवई नगर, कानपुर - 208011 प्रथम संस्करण - 2001 |
| 4. | डॉ. कालीचरण 'स्नेही' | सर्वेश्वर और उनका साहित्य | आराधना ब्रदर्स 124/152 सी-गोविंद नगर कानपुर, प्रथम संस्करण-1997 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 5. | डॉ. कृष्णदत्त पालिवाल | सर्वेश्वरदयाल सक्सेना का रचना कर्म | वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली - 110002 प्रथम संस्करण - 2006 |
| 6. | केशवदेव शर्मा | आधुनिक हिंदी उपन्यास और वर्ग-संघर्ष | राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण - 1991 |
| 7. | कुसुम शर्मा | साठोत्तरी हिंदी उपन्यास विविध प्रयोग | श्याम प्रकाशन, जयपुर संस्करण - 1990 |
| 8. | डॉ. गुलाबराय | सिद्धांत और अध्याय | प्रतिभा प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण - 1991 |
| 9. | डॉ. चंद्रकांत बांदिवडेकर | उपन्यास स्थिति और गति | पूर्वोदय प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण - 1977 |
| 10. | डॉ. जयश्री शिंदे | मनोविज्ञान के कटघरे में हिंदी-कहानी | अन्नपूर्णा प्रकाशन, साकेतनगर, कानपुर - 208014, प्रथम संस्करण - 1999 |
| 11. | डॉ. नीता रत्नेश | भागवतीचरण वर्मा के उपन्यासों में नारी | पांडुलिपि प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण - 1996 |
| 12. | डॉ. दुर्गाशंकर मिश्र | अज्ञेय का उपन्यास साहित्य | हिंदी साहित्य भंडार, लखनऊ प्रथम संस्करण - 1976 |
| 13. | डॉ. धनराज मानधाने | हिंदी के मनोवैज्ञानिक उपन्यास | ग्रंथम प्रकाशन, रामबाग, कानपुर - 12, प्रथम संस्करण - 1971 |
| 14. | डॉ. प्रतापनारायण टंडन | हिंदी उपन्यास कला | हिंदी समिति सूचना विभाग, उत्तर प्रदेश, संस्करण - 1970 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 15. | डॉ. प्रकाश शंकर चिकुर्डेकर | रादरश मिश्र के उपन्यासों में समाज जीवन | नमन प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण - 2002 |
| 16. | डॉ. प्रतापनारायण टंडन | हिंदी उपन्यास में कथा-शिल्प का विकास | हिंदी साहित्य भंडार, लखनऊ द्वितीय संस्करण - 1964 |
| 17. | डॉ. प्रदीप शर्मा | हिंदी उपन्यासों का शिल्प विधान | अभय प्रकाशन, किदवई नगर, कानपुर - 11 |
| 18. | डॉ. बच्चन सिंह | हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास | राधाकृष्ण प्रकाशन, अंसारी रोड, दरियागंज, दिल्ली संस्करण - 2006 |
| 19. | डॉ. माफतलाल पटेल | हिंदी के मनोवैज्ञानिक उपन्यास | शांति प्रकाशन, रोहतक, हरियाणा, संस्करण - 1997 |
| 20. | डॉ. त्रिभुवन सिंह | हिंदी उपन्यास और यथार्थ | हिंदी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी, चतुर्थ संस्करण - 1965 |
| 21. | डॉ. त्रिभुवन सिंह | हिंदी उपन्यास : शिल्प और प्रयोग | हिंदी प्रचार संस्थान, वाराणसी, प्रथम संस्करण - 1973 |
| 22. | डॉ. राजमल बोरा | हिंदी उपन्यास : प्रयोग के चरण | नमिता प्रकाशन, 6, आनंदनगर, टाउन हॉल, औरंगाबाद, प्रथम संस्करण - 1972 |
| 23. | डॉ. रामनिवास गुप्त | हिंदी साहित्य समीक्षा | आधुनिक प्रकाशन, मौजपुर, दिल्ली - 110053 प्रथम संस्करण - 2001 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 24. | डॉ. विजय प्रकाश मिश्र | हिंदी के प्रतिनिधि कवि | विद्या प्रकाशन, गुजैनी, कानपुर - 22<br>प्रथम संस्करण - 2002 |
| 25. | शांतिस्वरूप गुप्त | पाश्चात्य काव्यशास्त्र के सिद्धांत | अशोक प्रकाशन, दिल्ली,<br>सातवाँ संस्करण - 1990 |
| 26. | डॉ. शांतिस्वरूप गुप्त | उपन्यास : स्वरूप, संरचना तथा शिल्प | अलंकार प्रकाशन, दिल्ली,<br>प्रथम संस्करण - 1980 |
| 27. | डॉ. शामसुंदरदास | साहित्यलोचन | इंडियन प्रेस प्रा. लि. प्रयाग<br>अठ्ठरहवाँ संस्करण - 1973 |
| 28. | डॉ. श्याम वर्मा | आधुनिक गद्य शैली का विकास | ग्रन्मश, रामबाग, कानपुर - 12<br>प्रथम संस्करण - 1971 |
| 29. | डॉ. सरोजनी त्रिपाठी | आधुनिक हिंदी उपन्यासों में वस्तु विन्यास | अराधना प्रेस, कानपुर - 12,<br>संस्करण - 1973 |
| 30. | डॉ. सत्यपाल चुघ | प्रेमचंदोत्तर उपन्यासों की शिल्पविधि | इकाई प्रकाश, हिम्मतगंज, इलाहाबाद - 1<br>प्रथम संस्करण - 1968 |
| 31. | सर्वेश्वरदयाल सक्सेना | सर्वेश्वरदयाल सक्सेना : संपूर्ण गद्य रचनाएँ खंड - तीन | किताब घर, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली<br>प्रथम संस्करण - 1992 |
| 32. | डॉ. सुखदेव शुक्ल | हिंदी उपन्यास का विकास और नैतिकता | अनुसंधान प्रकाशन, आचार्य नगर, कानपुर<br>सितंबर - 1966 |

## क) हिंदी शब्दकोश -


| | | | |
|---|---|---|---|
| 1. | डॉ. गणपतिचंद्र गुप्त | हिंदी भाषा एवं साहित्य विश्वकोश | एटलांटिक पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्युटर्स, नई दिल्ली, संस्करण - 1995 |
| 2. | (सं.) गोपीनाथ श्रीवास्तव | राजपाल हिंदी अंग्रेजी पर्यायी कोश | राजपाल एण्ड सन्ज, कश्मीरी गेट, दिल्ली, संस्करण - 1991 |
| 3. | (सं.) धीरेंद्र वर्मा | हिंदी साहित्य कोश | ज्ञान मंडल लिमिटेड, वाराणसी, द्वितीय संस्करण - 1963 |
| 4. | (सं.) नगेंद्र वसु | हिंदी विश्वकोश | बी. आर. पब्लिशिंग, कार्पोरेशन, दिल्ली, संस्करण - 1986 |
| 5. | (सं.) श्री. नवलजी | नालंदा विशाल शब्द-सागर | आदिश बुक डेपो, दिल्ली, संस्करण - 1988 |
| 6. | (सं.) डॉ. रमाशंकर शुक्ल, 'रसाल' | भाषा शब्द कोश | रामनारायणलाल बेनीप्रसाद, चतुर्थ संस्करण - 1961 |
| 7. | (सं.) श्यामसुंदरदास | हिंदी शब्द सागर, खंड-आठवाँ | नागरी प्रचारिणी सभा, काशी संस्करण - 1971 |


## ड) पत्र-पत्रिकाएँ -


| | | | |
|---|---|---|---|
| 1. | (सं.) जगदीश चतुर्वेदी | भाषा (त्रैमासिक) | सितंबर, 1984 |
| 2. | (सं.) राजेंद्र दर्डा | लोकमत समाचार (दैनिक) | 20 मई, 2007 |